International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 05-07-2026, Accepted: 05-08-2026, Published: 20-08-2026
Volume 12, Issue 3, 2026, Page No. 105-107

समाज और मनुष्य के संघर्ष का काव्यः केदारनाथ अग्रवाल

रेवन्त राम
शोधार्थी, हिन्दी विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत

सारांश
प्रगतिवादी केदारनाथ अग्रवाल, जनकवि है, वे जनमानस के अटूट विश्वास और जीवन मूल्यों पर आधारित कविताओं के संवाहक है। केदारजी मानते हैं कि लेखक या कवि समाज से जुड़ा होता है। यह सामाजिक प्रतिबद्धता ही लेखक की चेतना को परंपरा की रूढ़ियों से अलग करती है। लेखक की वैचारिक अभिव्यक्ति की वैयक्तिक स्वतंत्रता भी अहंवादी प्रवृतियों का खण्डन करती है। तभी लेखक जनजीवन से जुड़ाव पैदा कर पाता है।
केदारनाथ अग्रवाल की कविता, मनुष्य वे स्वाधीनता परक मूल्यों की समर्थक है। उन्होंने अपनी कविता के माध्यम से श्रमजीवी, शोषित और दमित वर्गों के हितों की लड़ाई लड़ी है। उनकी कविताओं में प्रकृति स्वतंत्र रूप से उपस्थित है। केन नदी तो उनके मानवीय जीवन का संगम स्थल रही है।
केदारनाथ अग्रवाल की कविता, स्त्री विमर्श का जीवन्त दस्तावेज है। उनकी कविता समाज में स्त्री को गरिमा प्रदान करती है, उनके संघर्षों और श्रम को प्रतिष्ठापित करती है। उनकी कविताओं में स्वस्थ स्त्री–प्रेम दिखायी देता है।
समग्र रूप में, व्यापक संदर्भों के परिप्रेक्ष्य में, केदारनाथ अग्रवाल की कविता में उनकी प्रगतिशील विचारधारा और श्रमिक–जनवादी दृष्टिकोण को दर्शाती है। जिसमें समतामूलक समाज की स्थापना उनका परम आदर्श है।

मूल शब्दः प्रकृति, धरती– पहाड़, जनता, खेत– खलिहान, अहीरन, केन नदी, किसान, गरीब, मजदूर

हिन्दी की प्रगतिशील धारा के प्रमुख हस्ताक्षर केदारनाथ अग्रवाल का जन्म 1 अप्रैल 1911 को, कमासिन, बांदा (उत्तर प्रदेश) में हुआ, इनकी उच्च शिक्षा इलाहाबाद विश्वविद्यालय तथा डी.ए.वी. कॉलेज, कानपुर से हुई।
केदारनाथ अग्रवाल के प्रमुख काव्य संग्रह 'युग की गंगा' (1947), 'नींद के बादल' (1947), 'लोक और आलोक' (1957), 'फूल नहीं रंग बोलते है' (1965), 'आग का आईना' (1970), 'पंख और पतवार' (1980), 'बम्बई का रक्त स्नान' (1981) तथा 'कहें केदार खरी–खरी' (1983ः संपादक – अशोक त्रिपाठी), 'जो शिलाएँ तोड़ते है' (1986) और 'खुली आँखे खुले डैने' (1993) आदि प्रमुख है।
'अपूर्वा' काव्य संग्रह के लिए 1986 में साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला है।
हिंदी की प्रगतिशील कविता और केदारनाथ अग्रवाल एक दूसरे के पर्याय है, केदार जी की कविता का सौंदर्यशास्त्र ही प्रगतिशील कविता का सौन्दर्यशास्त्र है। केदारनाथ अग्रवाल की प्रतिनिधि कविताओं का संपादन अशोक त्रिपाठी ने 'प्रतिनिधि कविताएँ– केदारनाथ अग्रवाल' शीर्षक के तहत किया है।
बकौल अशोक त्रिपाठी "केदार जी जिन्दगी की सच्चाई की लड़ाई के कवि है। जिन्दगी की सच्चाई की लड़ाई में विरोधी शक्तियों की मक्कार बर्बरता से संघर्ष करते कभी–कभी अवसाद (निराशा और हताशा नहीं) के विरल क्षण भी आते हैं। ये क्षण कभी नए विकल्प भी देते हैं।" [1]
कविता में महान मानवीय मूल्यों के पक्षधर तथा अन्याय और शोषण के प्रति विरोध और दृढ़ संकल्पित 'जय यात्रा' की आश्वस्ति केदारनाथ अग्रवाल के काव्य की संघर्षशील चेतना की परिचायक है।
"उनकी कविता की चिंतन धारा का केन्द्रिय बिंदु है– खेती किसानी, जिसके मूल में है 'किसान' खेती किसानी का मूल अधार है 'बादल'। जिस कवि की चिंता के मूल में किसान होगा, वह बादलों पर कविता लिखेगा ही लिखेगा।" [2]
कविता के साथ–साथ चिंतन के मूल में प्रकृति तथा उससे संबंधित उपादनों का ही प्रभाव रहा कि केदारनाथ अग्रवाल ने अपने जीवन के गहरे यथार्थवादी भावों को सहज रूप में अभिव्यक्ति प्रदान की और 'चन्द्रगहना से लौटती बेर' तथा 'बसंती हवा' जैसी कविताएँ इस प्राकृतिक चेतना की उन्मुक्त और सहज अभिव्यक्तियों बनकर पाठक के हृदय को भावविभोर करती है।
वे जीवन को उसकी समग्रता में देखने के हिमायती है, जहाँ ग्रामीण चेतना, संघर्ष, श्रम, प्रकृति, राजनीतिक चेतना, मनुष्यता और सौंदर्य साथ–साथ चलते जाते हैं। केदारनाथ अग्रवाल एक मुकम्मल जीवन के सामाजिक सरोकारों से लैस, विशिष्ट परिप्रेक्ष्य पर आधारित चिंतनधारा के जीवन्त कवि है।
"केन और केदार एक दूसरे के प्रतीक बन गए है, बांदा की जीवन रेखा केन नदी केदारजी के लिए महज एक जल प्रदायिनी नदी भर नहीं है, अपितु वह प्रेम तथा रस से भरी चेतना प्रवाहिनी भी है, जहाँ वह अपने क्षेत्र के लोगों की जड़ता से, निष्प्राण चेतना से मायूस होकर पत्थर की सी संज्ञा दे देते हैं, क्योंकि चेतना की यह नदी भी उनमें कोई हलचल नहीं पैदा कर पा रही है। यह संज्ञाहीनता ही उन्हें कचोटती भी है।" [3]

पानी पत्थर चाट रहा है गुमसुम.....

यहाँ वह सहमा हुआ राही, वस्तुतः केदानाथ अग्रवाल स्वयं ही है, और केन विविध रूपों में उनकी चेतना में बसती और उतरती जाती है।

वस्तुतः केन, इनकी कविताओं में प्रेम और सौंदर्य के अनन्त स्रोत की वह अजस्र धारा है, जहाँ से वह निरंतर प्रेरणा लेते हैं, मानों प्रेयसी केन का नायक स्वयं कवि, उसे सोता हुआ देखकर 'दबे पाँव' घर वापस आ जाता है, कि कहीं उसकी नींद में कोई खलल ना पड़ जाए।

"आज नदी बिल्कुल उदास थी,
सोयी थी अपने पानी में,
उसके दर्पण पर
बादल का वस्त्र पड़ा था।"[4]

केदारजी लीक से बंधी परिपाटी से अलग द्वष्टि के सौंदर्य के कवि हैं। उन्हें उस हर काम में सौंदर्य दिखाई देता है, जो सृजन के लिए दृष्टि देता है और कर्मशील बनाता है। संघर्ष और अन्याय के विरुद्ध डटकर लडनेवाले '110 के अभियुक्त' कविता में वह सौंदर्य दर्शनीय अभिव्यक्ति के साथ उपस्थित होता है।
सामाजिक वर्जनाओं को तोड़ने वाली उनकी कविता 'मुक्त युवती' में, और अंधेरा दूर करने और सरकार पर कयामत ढ़ाने वाले प्रतिरोध का प्रतीक 'एक हथौड़े वाला' जैसी कई कविताओं में यह सौंदर्य अभिव्यक्त हुआ है।
पारंपरिक नारी सौंदर्य, फूलों, प्रकृति और कला के अन्य सुंदतम उपमानों की रीति से युक्त सौंदर्य से हटकर श्रमशील नारियों का 'स्वेद' प्रेरित करता है, जब वे 'कौन अलबेले की नार झमाझम पानी भरै' में इस सौंदर्य को अपनी कविता का विषय बनाते हैं।
केदारनाथ अग्रवाल 'धूप' के प्रतीक से सात्विक और सघन बिम्बों की रचना करते हैं, क्योंकि वह अंधेरे के नहीं, उल्लास से दीप्त प्रकाशमयी आस्था और कर्म से प्रेरित संघर्ष के कवि है। अपनी स्वतंत्र अर्थवत्ता में, गहन ऐन्द्रिकता के लिए ऐसे बिम्बों द्वारा उन्होंने कविता को नवीन आयाम प्रदान किए हैं।
"सौंदर्य के मसले पर केदारजी का मानना है, कि किसी वस्तु को महज सुंदर कह देने से वह वस्तु सुंदर नहीं हो जाएगी। वह सुंदर क्यों है, यह बताना भी अनिवार्य है।" [5]

'धूप' चमकती है चांदी की साड़ी पहने
मैके में आयी बेटी की तरह मगन है
फूली सरसों की छाती से लिपट गयी है" [6]

कवि अग्रवाल मानवीय संबंधों के प्रति संवेदनशील रहे हैं, मनुष्य के शुचितम ह्रदयगत भावों से उन्हें लगाव है, जिनसे संपूर्ण मनुष्यगत संस्कृति का अस्तित्व है जहाँ वे शोषित, दलित और उपेक्षित दीन–हीन मनुष्यों का सहानुभूति से चित्रण करते है, वहाँ भी उनका मानव प्रेम परिलक्षित होता है।
मानवीय मूल्यों के प्रति सहज उदात्तता, हिंसात्मक कृत्यों और युद्धों का प्रतिकार भी उनका मानव प्रेम प्रदर्शित करता है, कवि अग्रवाल ऐसे मनुष्यों को मानव की कोटि में ही नहीं मानते है, जो निरंतर मानव और मानवता का हनन करते हैं, उनके लिए मानव होने का अर्थ है, सभी प्रकार के कष्टों को सहन करते हुए भी अपने चरित्र और आदर्शों, विचारों और मूल्यों का संरक्षण करना।
कवि अग्रवाल ने अपने काव्य में शोषितों और शोषण के विरोध स्वरूप जो चित्र प्रस्तुत किए है, वे उनकी व्यापक जीवन दृष्टि को प्रकट करते है। शोषण का वर्गीय चरित्र तथा मध्यमवर्गीय एवं निचले तबके से जुड़ी शोषण संबंधी सूक्ष्म दृष्टि में अग्रवाल जी ने न केवल श्रमिक वर्ग अपितु स्त्रियों के आर्थिक और दैहिक शोषण को भी शामिल किया है।
केदारनाथ अग्रवाल ने पूँजीपतियों के प्रति व्यंग्य भाव और विरोधी भावों के साथ शोषण प्रक्रिया को उसकी समग्रता में परखा है, जहाँ वे खेतों में कार्यरत मजदूरों से लेकर कारखानों में कार्य करने वाले श्रमिकों के जीवन से जुड़ी विभिन्न चुनौतियों तथा अवस्थाओं जैसे– गरीबी, कठिन जीवन–संघर्ष, असहायता की स्थिति इत्यादि को अपने काव्य में विषयगत रूप में शामिल किया है। इसलिए उनके काव्य में न तो एकरसता मिलती है और न ही दुहराव होता है, क्योंकि सारा श्रमिक जीवन ही संपूर्ण श्रम प्रक्रिया के रूप में साथ–साथ चलता है।

"आदमी मजबूर है बिकने के लिए
चाहे कम में बिके
या अधिक में
आदमी मजबूर है बिकने के लिए
न बिकना मौत है–
बिकना जीवन" [7]

श्रमिक वर्ग की यह विवशता है कि उसे अपने श्रम को बेचना पड़ रहा है, सामान्य वर्ग जहां अभावग्रस्त है, वहीं शोषणकारी प्रवृत्तियां विभिन्न रूपों में श्रम तथा उसका उचित मूल्य प्रदान करने में विफल साबित होते हैं।

"निर्धन,
निरीह,
गर्हित गरीब,
शोषण के मारे सभी लोग
पुराकाल से
शून्य शून्य का
जोड़ रहे हैं
योग" [8]

साहित्यकार, समाज का अधिक संवेदनशील और प्रबुद्ध प्राणी होता है। निम्न एवं गरीब व्यक्ति सदियों से शोषित होता आया है। समाज के उच्चवर्गीय तथा प्रभुत्व संपन्न वर्ग ने पूँजी की ताकत तथा अन्य दमनकारी साधनों और प्रपंचों के माध्यम से उस शोषित वर्ग को कभी समाज की मुख्यधारा में सम्मिलित होने का अवसर ही नहीं दिया।
'गांव का महाजन' शीर्षक कविता के माध्यम से केदारनाथ जी ने सारी सामाजिक शोषणकारी व्यवस्था को उजागर किया है, जहाँ न केवल समाज की दारुण व्यथा अपनी विपन्नता और समस्याओं से त्रस्त है, वहीं शोषक महाजन केवल मानवीय संवेदना का अभिनय कर गरीबों को अपने ऋण–जाल में बांधकर रखता है–

"सूड़ लपेटे है कर्जे की भातृत्व ग्रामीणों को,
मुक्ति अभी तक नहीं मिली है इन दीनों को,
इन दीनों के ऋण का रोकड़ कांड बड़ा है,
अब भी किंतु अछूता शोषण–कांड पड़ा है।" [9]

किसानों की यह ऋणग्रस्त स्थिति सहज ही शोषण–व्यवस्था का संकेत कर जाती है। पूँजीवादी तंत्र में बड़े–बड़े कारखानों में श्रम का उत्पादनात्मक रूप तो सुरक्षित बना रहता है, किंतु रचनात्मकता समाप्त हो जाती है। इस तरह का श्रम बहुत कुछ सामंती ढाँचे की तरह बेगार जैसा हो जाता है।

कवि अग्रवाल बलात् श्रम का विरोध तो करते ही है, साथ ही श्रम के सौंदर्य को सही दृष्टि से अन्वेषित भी करते हैं, और ऊर्जास्वित श्रम के प्रति दायित्व बोध का भाव अभिव्यक्त होता है–

"मार हथौड़ा,
कर कर चोट
लाल हुए काले लोहे को
जैसा चाहे वैसा मोड़।" [10]

केदारनाथ अग्रवाल वस्तुतः छोटी कविताओं के बड़े और गहन अर्थों वाले कवि हैं, जिनमें व्यंजना का विस्तार है तथा अर्थ की गहराई भी है। संपूर्ण मानव जाति की विकास गाथा में प्रकृति और मनुष्य के रिश्ते को पिरोने की उनकी अभिव्यंजना और भावाभिव्यक्ति की शैली, गूढ़ अर्थों को सहज ही अवगुंठित करती है–

"पेड़ नहीं,
पृथ्वी के वंशज हैं,
फूल लिये,
फल लिये,
मानव के अग्रज हैं।" [11]

केदारनाथ की यह वस्तुनिष्ठ शैली, मुख्य रूप से उनकी आत्मनिष्ठता की यौगिक संहति का परिणाम है। वस्तुनिष्ठता पहले उनकी आत्मनिष्ठता को निर्मित करती है, परंतु यह महज कोरे रूप में ही कविता में नहीं आती है, बल्कि मानवीय मुल्यों और शैलीगत वैशिष्ट्य को अभिव्यक्ति प्रदान करती है।

"केदारनाथ अग्रवाल, अपनी धरती के कवि है।"– बुंदेलखण्ड की उस धरती से उन्हें प्रेम है तथा यह स्थानीयता, उनकी कविताओं को प्रमाणिकता प्रदान करती है। जिसमें परिवेश, ग्रामीण संस्कृति, प्रकृति, अपनापन और बोली में अक्खड़ता भी अपने अन्तर्विरोधी चरित्र के साथ चलती जाती है। लेकिन उसका प्रभाव और व्याप्ति स्थानीयता को लांघकर राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रिय हो गई है। जहाँ दुनिया की कई भाषाओं में इनका अनुवाद हो चुका है।

लयबद्धता तथा संगीतबद्धता, केदारजी की कविताओं में अन्तर्युक्त है, अतुकांत होते हुए भी उनकी कविताएँ, गेयता की सीमा को छूती है। जीवन की विपरीत परिस्थितियों से जूझने वाली संघर्षशील, किंतु फिर भी अपने सिद्धांतों से दूर न हटने वाली मानवीयता की तलाश केदारनाथ अग्रवाल के काव्य का केन्द्रिय भाव कहा जा सकता है। वे इस तलाश में ऐसे मानव मात्र की करुणा और प्रेम तत्व को महत्वपूर्ण स्थान देते है।

केदारजी सूक्ष्म और कोमल संवेदनाओं के अद्‌भूत कवि हैं। उनकी कविताओं का शिल्प उनकी विषयवस्तु से अनुशासित होता है। केदारनाथ अग्रवाल ने कुल लगभग ढ़ाई हजार के आसपास कविताएँ लिखी हैं। इनका रचना संसार, विषयवस्तु, भाषा और शिल्प के स्तर पर बहुत अधिक विविधता लिए हुए है।

केदारनाथ अग्रवाल की सामाजिक यथार्थ की अवधारणा मार्क्सवादी साहित्य चिंतन पद्धति पर आधारित है, जिसमें यथार्थ चित्रण और कल्पना प्रसूत दृश्यात्मक बिम्बों को विचार प्रक्रिया का माध्यम बनाकर वर्तमान सामाजिक यथार्थ तक संतुलन स्थापित करने का प्रयास किया है।

डॉ. रामविलास शर्मा के अनुसार "साहित्य का विकास दो परस्पर संबद्ध स्तरों पर होता है। एक है विश्व प्रतीति का स्तर, सामाजिक जीवन के हमारे ज्ञान का स्तर, और दूसरा है भावजगत्, इंद्रिय बोध, हमारे सौंदर्य बोध का स्तर। इसमें संतुलन कायम रखना आवश्यक होता है।" [12]

केदारनाथ अग्रवाल ने इसी यथार्थपरक दृष्टिकोण के तहत स्थिरतावादी दृष्टि को व्यापक बनाकर मानवीय मूल्यों को यथार्थ की ठोस जमीन का संस्पर्श प्रदान किया है

इसके लिए कवि अग्रवाल ने काव्य भाषा में किसी विशेष प्रकार के शब्दों के प्रयोग का अनावश्यक मोह नहीं रखा है। छोटे –छोटे शब्दों के अनुशासित प्रयोग द्वारा उन्होंने भाषा को बिम्बधर्मी रूप प्रदान किया है। कम से कम शब्दों में अपनी बात कहने की उनकी निप्रणता, उनके भाषा सामर्थ्य को दर्शाती है।

कवि अग्रवाल के काव्य में प्रयुक्त अंलकार, उनके शैल्पिक पक्ष को सुंदर बनाने के साथ ही भावों को गहनता और स्पष्टता भी देते हैं। चमत्कारपूर्ण प्रयोग उनमें लगभग नहीं हुआ है। कवि अग्रवाल की काव्य–भाषा का औपम्य विधान, लोक जीवन से प्रेरणा लेता है। सांस्कृतिक तत्वों से उपमाएँ उनकी कविताओं को सूक्ष्म मानवीय भावों और प्रतीकों के प्रयोग से संवर्धित करती है।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि कवि अग्रवाल की कविताएँ मनुष्य जीवन और समाज की पूरी प्रक्रिया को समाहित किए हैं। निराशा के वातावरण में भी वे श्रम एवं संघर्ष करने की प्रेरणा देते हैं। वे समष्टि हित की भावना लिए हैं। उन्हें जनता और धरती का अनुराग ही आशावान बनाता है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. अग्रवाल, केदानाथ (ले.), त्रिपाठी, अशोक (सं.), प्रतिनिधि कविताएँ, राजकमल पेपर बैक्स, नई दिल्ली, 2023, पृ. 7
2. वही, पृ. 8
3. वही, पृ. 09
4. अग्रवाल, केदारनाथ (ले.), त्रिपाठी, अशोक (सं.), संचयिता, साहित्य भंडार, इलाहाबाद, 2011, पृ. 171
5. अग्रवाल, केदानाथ (ले.), त्रिपाठी, अशोक (सं.), प्रतिनिधि कविताएँ, राजकमल पेपर बैक्स, नई दिल्ली, 2023, पृ. 10
6. वही, पृ. 95
7. अग्रवाल, केदारनाथ (ले.), त्रिपाठी, अशोक (सं.), कुहकी कोयल खड़े पेड़ की, साहित्य भंडार, इलाहाबाद, 2009, पृ. 72
8. वही पृ. 185
9. अग्रवाल, केदारनाथ, फूल नहीं रंग बोलते हैं, साहित्य भंडार, इलाहाबाद, 2009, पृ. 82
10. वही, पृ. 83
11. अग्रवाल, केदानाथ (ले.), त्रिपाठी, अशोक (सं.), प्रतिनिधि कविताएँ, राजकमल पेपर बैक्स, नई दिल्ली, 2023, पृ. 66
12. रामविलास शर्मा, आस्था और सौंदर्य बोध, पृ. 16